विचार बिन्दु

आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। –एमर्सन

घास-भूमि पर आक्रामक प्रजातियों से उत्पन्न संकट व समाधान

अरावली पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम भारत की प्रमुख पारिस्थितिक इकाई है। यह दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक लगभग 670 किलोमीटर में फैली हुई है। यह क्षेत्र मुख्यत: शुष्क से अर्द्ध-शुष्क जलवायु वाला है, जिसमें वार्षिक वर्षा औसतन 500-700 मिमी के बीच होती है। अरावली की घास-भूमियाँ पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी एवं जल संरक्षण तथा ग्रामीण समुदायों की आजीविका के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये घास-भूमियाँथार रेगिस्तान के विस्तार को रोककर उत्तर भारत, विशेष रूप से दिल्ली-एनसीआर को मरुस्थलीकरण के खतरे से सुरक्षित रखती हैं। घासभूमियाँ पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का एक समृद्ध स्त्रोत हैं, जो जैवविविधता संरक्षण, जलसंरक्षण, जलवायु नियमन और मृदा उर्वरता जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य निभाती हैं। ये क्षेत्र अनेक वन्यजीवों, विशेषकर चरने वाले स्तनधारियों और परागणकर्ताओं का आवास हैं, जिससे खाद्यशृंखला और परागण-आधारित कृषि प्रणाली सुदृढ़ होती है। घासभूमियाँ वर्षा जल के संचयन और भूजल पुनर्भरण में सहायक होती हैं तथा भूमिकटाव को रोक कर मृदा की उत्पादकता बनाए रखती हैं। साथ ही, ये कार्बन को जैविक रूप में मृदा में संचित करके जलवायु परिवर्तन के शमन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन सेवाओं का आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक महत्व अत्यंत व्यापक है।

तेजी से बढ़ते शहरीकरण, अनियंत्रित खनन, अत्यधिक चराई, अतिक्रमण और विदेशी आक्रामक पौधों के कारण अरावली की घासभूमियों का बहुत ह्रास हुआ है। राजस्थान में पत्थर के खनन से कई पहाड़ियाँ विलुप्त हो गई हैं, वहीं दिल्ली और हरियाणा के क्षेत्रों में शहरी विकास और अतिक्रमण से पहाड़ियों का अस्तित्व खतरे में है। इसके अतिरिक्त, विलायती कीकर या प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा, लैंटाना, और पार्थेनियमया गाजरघास जैसी आक्रामक प्रजातियों ने घास के बीड़ों की स्थानीय वनस्पतियों को गंभीर नुकसान पहुँचाया है।

विदेशी प्रजाति प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा के आक्रमण से देश के विभिन्न क्षेत्रों में इन घासभूमियों की स्थिति चिंताजनक हो गई है। यह पौधा मूलत: मध्य और दक्षिण अमेरिका का है, जिसे भारत में ब्रिटिश काल के दौरान मरुस्थलीकरण नियंत्रण और ईंधन की समस्या के समाधान हेतु लगाया गया था। बाद में यह प्रजाति तीव्रता से फैलती गई, और स्थानीय पारिस्थितिक तंत्रों के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया है। उदाहरण के लिए तमिलनाडु राज्य के पॉइंट कैलीमर वन्यजीव अभयारण्य, गिंडी राष्ट्रीय उद्यान और सत्यमंगलम बाघ अभयारण्य में हुए अध्ययनों के अनुसार, प्रोसोपिस के विस्तार के कारण यहाँ पाए जाने वाले कृष्णमृग जैसे स्थानीय जीवों की आबादी और वितरण गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं। घासभूमि की उपलब्धता, घास का उत्पादन और खुले पर्यावास क्षेत्र में कमी आने से कृष्णमृग का घनत्व घट गया है। प्रोसोपिस के बढ़ते आवरण के कारण घास के मैदानों में होने वाली जैविक गतिविधियाँ कम हुई हैं।

गुजरात राज्य के बन्नीघासभूमिकभी एशिया के सबसे विशाल प्राकृतिक चरागाह थे, परन्तु अब प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा के प्रसार ने स्थानीय पारिस्थितिकी को बुरी तरह प्रभावित किया है। यहाँ की मूल घास प्रजातियाँ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। इस बदलाव का प्रभाव स्थानीय अर्थव्यवस्था और समाज पर भी पड़ा है। ग्रेट रण ऑफ कच्छ क्षेत्र और जंगली गधा वन्यजीव अभयारण्य में भी यही समस्या देखी गई है, जहाँ बीते दशकों में घासभूमि का लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र प्रोसोपिस से ढक गया है। प्रोसोपिस की वार्षिक प्रसार दर यहाँ 2 प्रतिशत से 7 प्रतिशत तक पाई गई है।

राजस्थान के थार मरुस्थल में भी प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा ने सामुदायिक चरागाहों पर आक्रमण किया है, जिससे स्थानीय वनस्पतियों की प्रजातियों में भारी गिरावट आई है। इस क्षेत्र में प्रोसोपिस के नियंत्रण के लिए लकड़ी से चारकोल बनाने, फलियों से आटा बनाने जैसे उपायों का उपयोग आर्थिक लाभ के साथ किया जाने के प्रयास हुए है, किन्तु स्थानीय समुदाय केवल ईंधन के लकड़ी के लिए शाखाएं काट कर ले जाते हैं और ठूंठ में पुन: प्रस्फुटन होते रहने के कारण प्रसार को नियंत्रित नहीं किया जा सका। छोटे स्तनधारियों जैसे कृन्तकों पर भी प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा के प्रभाव का अध्ययन पश्चिम भारत के घासभूमि पारिस्थितिकी में किया गया है। शोध में स्पष्ट हुआ कि प्रोसोपिस के घने आवरण वाले क्षेत्रों और पूर्णत: खुले घासभूमि क्षेत्रों में कृन्तकों की आबादी अधिक रही, जबकि आंशिक रूप से फैले प्रोसोपिस क्षेत्रों में उनकी संख्या कम थी। इससे यह संकेत मिलता है कि प्रोसोपिस के प्रभाव स्थान विशेष और प्रजाति विशेष पर निर्भर हैं।

यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर पक्षी अभयारण्य) भी प्रोसोपिस के आक्रमण से अत्यंत प्रभावित हुआ है। शोध में पाया गया है कि पिछले पाँच दशकों (1972-2024) के दौरान में यहाँ प्रोसोपिस का फैलाव लगभग 82 प्रतिशतबढ़ा है, जबकि स्थानीय घास भूमियाँ 51 प्रतिशत घट गई हैं। इस अवधि में प्रोसोपिस का वार्षिक प्रसार दर 3 प्रतिशत से अधिक आँकी गई है। हालाँकि वर्ष 2021 के बाद से प्रबंधन प्रयासों से इसके फैलाव में थोड़ी कमी आई है, लेकिन समस्या अभी भी बनी हुई है और निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

भारत के उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में घासभूमियाँ एवं वन पारिस्थितिक तंत्र लैंटाना है के कारण भी संकटग्रस्त हैं। लैंटाना मूल रूप से दक्षिण अमेरिका से आया एक सजावटी पौधा है, जो अब भारत के लगभग सभी उष्ण एवं उपोष्ण क्षेत्रों में तेजी से फैल चुका है। लैंटाना की झाड़ी न केवल स्थानीय जैवविविधता को नष्ट करती है, बल्कि वन्य जीवों के लिए प्राकृतिक आवासों को भी हानि पहुँचाती है, जिससे मानव-वन्यजीव संघर्ष भी बढ़ रहा है। आंध्र प्रदेश की नल्लमल्लाय पर्वत श्रृंखला भी आक्रामक प्रजातियों से प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। यहाँ शोधार्थियों ने सात अत्यंत हानिकारक प्रजातियाँ चिन्हित की हैं जिनमें लैंटाना, गाजर घास या पार्थिनियम हिस्टेरोफोरस, चटक चाँदनी (हिप्तिससुआवेओलेंस, लाजवंती, क्लीओमविस्कोसा और विलायती बबूल शामिल हैं। ये स्थानीय वनस्पतियों के लिए अस्तित्व का खतरा बन चुकी हैं।

हाल ही में भारत सरकार ने 'अरावली ग्रीन वॉल' परियोजना प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य गुजरात से दिल्ली तक लगभग 1400 किलोमीटर लंबी और 5 किलोमीटर चौड़ी हरित पट्टी विकसित करना है। इस परियोजना में स्थानीय प्रजातियों का रोपण, जल संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और जैव विविधता संरक्षण मुख्य घटक हैं।

लैंटाना नियंत्रण के लिए एक प्रभावी रणनीति विकसित की गई है, जो कॉर्बेट बाघ अभयारण्य, कलेसर राष्ट्रीय उद्यान, हरियाणा, सतपुड़ा बाघ अभयारण्य, मध्य प्रदेश, और राजस्थान के रणथम्भोर और सरिस्का बाघ अभयारण्यों में सफलतापूर्वक लागू की गई है। इस पद्धति में पहले लैंटाना को जड़ सहित उखाड़कर हटाया जाता है। जड़ों वाला हिस्सा ऊपर की ओर रखते हुए ढेर लगाया जाता है जो बाद में सड़कर मिट्टी में कार्बन की मात्रा बढ़ाता है। बाद में अंकुरित होने वाली लैंटाना के नए पौधों को नियमित रूप से हटाया जाता है। खाली हुई भूमि का पारिस्थितिकी पुनर्स्थापन स्थानीय घास प्रजातियों और फोर्ब्स के माध्यम से किया जाता है।

हाल ही में भारत सरकार ने 'अरावली ग्रीन वॉल' परियोजना प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य गुजरात से दिल्ली तक लगभग 1400 किलोमीटर लंबी और 5 किलोमीटर चौड़ी हरित पट्टी विकसित करना है। इस परियोजना में स्थानीय प्रजातियों का रोपण, जल संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और जैव विविधता संरक्षण मुख्य घटक हैं। पुनर्स्थापन के लिए स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप स्वदेशी प्रजातियों का चयन आवश्यक है। चयनित प्रजातियाँ सूखा-सहनशील, तेजी से बढ़ने वाली, और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए। प्रमुख घास प्रजातियों में अंजन घास, पवना घास, धोलू घास, धामन घास शामिल हैं। ये प्रजातियाँ सूखा-सहिष्णु हैं, अच्छी चारा गुणवत्ता प्रदान करती हैं, और मिट्टी को स्थिर रखने में सहायक होती हैं। घासों के साथ-साथ स्थानीय शाकीय प्रजातियाँ जैसे इन्डिगोफेरा, सरफोंका, शंखपुष्पी आदि भी पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण हैं। ये शाकीय पौधे भूमि का आवरण बनाते हैं, मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाते हैं, और परागणकर्ताओं के लिए आवास प्रदान करते हैं।

इन घासभूमियों का पुनर्स्थापन न केवल पर्यावरणीय संतुलन के लिए आवश्यक है, अपितु यह ग्रामीण आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस पुनर्स्थापन प्रक्रिया का प्रथमचरण आक्रामक बाह्य वनस्पति प्रजातियों का प्रभावी नियंत्रण है। विलायती कीकर जैसी प्रजातियाँ भूमिगत जल, पोषक तत्त्वों एवं सूर्यप्रकाश का अत्यधिक दोहन कर देशज वनस्पतियों के विकास को अवरुद्ध करती हैं। इनका समूल उन्मूलन आवश्यक होता है। इसी प्रकार, लैंटाना तथा गाजर घास जैसी झाड़ियों का नियंत्रण निराई, छँटाई और दीर्घकालिक सतत निगरानी के माध्यम से किया जा सकता है। द्वितीय चरण में स्थल का समग्र मूल्यांकन किया जाता है, जिसमें मृदा की बनावट, जलस्त्रोतों की उपलब्धता, स्थल की ढाल, तथा शेष बची देशज वनस्पतियों की स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। इसके पश्चात, जल-संरक्षण एवं मृदा-उन्नयन हेतु समोच्च रेखीय खाइयों, अवरोध बाँधों, पत्थर बाँधों तथा गोबर या हरी खाद जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। तृतीय चरण में वर्षाऋतु के प्रारम्भ में स्थानीय देशज घासों -जैसे-सेनक्रस, डाईकैन्थियम, हेटेरोपोगोन आदि तथा शाकीय वनस्पतियों जैसे-स्टाइलोसेन्थेस, अलिसीकार्पस, नील आदि के बीजों का छिडकाव किया जाता है। पथरीले एवं दुर्गम क्षेत्रों में बीज-पिंड (सीड बॉल) जैसी नवाचार-आधारित विधियों का भी उपयोग किया जा सकता है।

बीजों के प्रसारण के उपरान्त प्रथम दो वर्षों तक इस नवस्थापित घासभूमि को चराई से पूर्णत: सुरक्षित रखना अनिवार्य होता है। इसके लिए अस्थायी बाड़, समुदाय-नियंत्रित चराई व्यवस्था, तथा पशुपालकों की सहभागिता से निगरानी की व्यवस्था की जाती है। पुनर्स्थापन की प्रगति की निरंतर निगरानी हेतु वार्षिक वनस्पति मूल्यांकन, चित्र विश्लेषण, तथा ग्राम आधारित विवरण प्रणाली को संस्थागत रूप देना चाहिए। जब घास एवं शाकीय वनस्पति स्थिर हो जाए, तब चरणबद्ध चराई एवं घास की कटाई की अनुमति दी जा सकती है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहे और समुदाय को सतत लाभ प्राप्त हो।

बीज एवं रोपण सामग्री की सुनिश्चितता हेतु राज्य वनविभाग की नर्सरियाँ, भारतीय घासभूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान (झाँसी), केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (जोधपुर), कृषि विश्वविद्यालयों एवं समुदाय आधारित बीज भंडारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों को प्रशिक्षित कर बीज संग्रहण, बीज प्रसंस्करण एवं नर्सरी संचालन की क्षमता विकसित की जा सकती है, जिससे दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता संभव हो सके।

नीतिगत दृष्टि से घासभूमि पुनर्स्थापन हेतु अंतराज्यीय समन्वय, स्पष्ट भू-अधिकार, स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता, एवं ग्रामीण आजीविका के सृजन हेतु योजनाबद्ध प्रयत्न अपेक्षित हैं। विशेष रूप से जलवायु संरक्षण से जुड़ी सेवाओं का आर्थिक मूल्य निर्धारण कर उसका प्रत्यक्ष लाभ समुदायों को प्रदान करना इस प्रक्रिया को स्थायित्व प्रदान करेगा। जन-जागरूकता अभियानों के माध्यम से लोगों को घासभूमि के पर्यावरणीय एवं आर्थिक महत्व से परिचित कराना भी अत्यन्त आवश्यक है।

अन्तत:, अरावली सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में घासभूमि पुनर्स्थापन एक दीर्घकालिक, बहु-स्तरीय एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रशासनिक संकल्प और जन-सहभागिता का समन्वित प्रयास आवश्यक है। यह प्रक्रिया न केवल पर्यावरणीय संतुलन और जलवायु अनुकूलन का माध्यम बनेगी, अपितु यह ग्राम्य जीवन, जल-स्त्रोतों, और जैवविविधता के लिए एक नवजीवन प्रदान करेगी-जिससे भावी पीढ़ियों के लिए एक संतुलित, हरित एवं टिकाऊ भारत की कल्पना साकार हो सकेगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

छात्रों की बढ़ती फीस, पेंशन अनिश्चितता- विश्वविद्यालयों का यथार्थ

अशोक शर्मा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में नवाचार, विशेषकर डिजिटलीकरण और जैसी प्रौद्योगिकियों के एकीकरण पर बहुत जोर दिया गया है, और यह उम्मीद की गई थी कि इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारें शिक्षण संस्थानों को बेहतर आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी। हालांकि, जैसा कि आपने अनुभव किया है, जमीनी स्तर पर यह अपेक्षा पूरी तरह से पूरी होती नहीं दिख रही है। 2020 में शिक्षा में नवाचार के लिए एक दूरदर्शी दृष्टिकोण है, लेकिन इसे लागू करने के लिए आवश्यक वित्तीय प्रतिबद्धता, विशेषकर राज्य सरकारों की ओर से, अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। जब तक केंद्र और राज्य सरकारें शिक्षा को एक महत्वपूर्ण निवेश के रूप में नहीं देखतीं और इसके लिए पर्याप्त बजट आवंटित नहीं करतीं, तब तक के नवाचार संबंधी लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त करना मुश्किल होगा।

राज्य सरकारें विश्वविद्यालयों को पर्याप्त आर्थिक सहायता नहीं दे रही हैं! एक ओर सरकार कहती है कि विश्वविद्यालय अपनी आय के स्त्रोत बढ़ाएँ: इसका मतलब है कि विश्वविद्यालय स्व-वित्तपोषित पाठ्यक्रम, परामर्श सेवाएं, अनुसंधान परियोजनाएं, या अन्य माध्यमों से धन जुटाएं। सरकार चाहती है कि विश्वविद्यालय अपनी वित्तीय आत्मनिर्भरता बढ़ाएं और पूरी तरह से सरकारी अनुदान पर निर्भर न रहें। विश्वविद्यालय एक तरफ तो आय बढ़ाने के लिए दबाव में हैं, और दूसरी तरफ, जब वे अपनी मेहनत से आय अर्जित करते हैं, कई राज्यों में सरकार इस आय का 25 प्रतिशत हिस्सा ले लेती है यह उनकी वित्तीय स्थिति को और कमजोर है!

उनके पास अपने विकास, बुनियादी ढांचे में सुधार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने या छात्रों को सुविधाएं देने के लिए बहुत कम पैसा बचता है। इसका सीधा असर शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है।

अंतत:, इस वित्तीय कमी का बोझ छात्रों पर ही पड़ता है। विश्वविद्यालय और कॉलेज अपनी आय की कमी को पूरा करने के लिए फीस बढ़ाते हैं, जिससे स्व-वित्तपोषित पाठ्यक्रमों की फीस और भी अधिक हो जाती है, जैसा कि हमने पहले चर्चा की। यह गरीब और मध्यम वर्ग के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा को और भी दुर्गम बना देता है।

सरकार का उद्देश्य विश्वविद्यालयों को आत्मनिर्भर बनाना हो सकता है, लेकिन इस तरह से आय का एक हिस्सा वापस लेना इस लक्ष्य को कमजोर करता है। यह विश्वविद्यालयों को अपनी पूरी क्षमता से काम करने से रोकता है। सरकार को विश्वविद्यालयों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें पर्याप्त वित्तीय स्वायत्तता भी देनी चाहिए ताकि वे अपनी आय का उपयोग शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के कल्याण के लिए कर सकें।

विश्वविद्यालयों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें बिना योजना के स्व-वित्तपोषित पाठ्यक्रम चलाने पड़ रहे हैं। इसका सीधा असर छात्रों पर पड़ता है, खासकर गरीब छात्रों पर, क्योंकि उन्हें इन पाठ्यक्रमों के लिए उच्च शुल्क देना पड़ता है।

विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अपने खर्च चलाने के लिए छात्रों से ट्यूशन, परीक्षा और अन्य संबद्धता शुल्क के नाम पर ज़्यादा पैसे लेने पड़ते हैं।कॉलेजों को विश्वविद्यालयों से संबद्धता बनाए रखने के लिए भी ज़्यादा शुल्क देना पड़ता है, और वे इस लागत को भी छात्रों से वसूलते हैं। यह सब मिलकर गरीब और वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा को मुश्किल बना देता है। शिक्षा एक अधिकार है, लेकिन इन शुल्कों के कारण यह एक महंगी वस्तु बन गई है, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों का शोषण होता है। यह सिर्फ पैसों का मामला नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता का भी सवाल है। जब उच्च शिक्षा महंगी हो जाती है, तो यह समाज के एक बड़े वर्ग के लिए पहुंच से बाहर हो जाती है। इससे गरीब बच्चे अच्छी शिक्षा पाने से वंचित रह जाते हैं, जिससे गरीबी और असमानता का दुष्चक्र चलता रहता है।

इस समस्या को हल करने के लिए कई स्तरों पर काम करना होगा : सरकारी फंडिंग में वृद्धि: सबसे ज़रूरी है कि राज्य सरकारें विश्वविद्यालयों को पर्याप्त वित्तीय सहायता दें। शिक्षा को निवेश के तौर पर देखा जाना चाहिए, न कि सिर्फ खर्च के तौर पर। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अपने शुल्क ढांचे को पारदर्शी बनाना चाहिए और हर शुल्क के पीछे का कारण स्पष्ट करना चाहिए। नियामक निकायों को कॉलेजों द्वारा मनमाने ढंग से शुल्क वसूलने पर कड़ी नज़र रखनी चाहिए और उन्हें रोकना चाहिए। आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता योजनाएं शुरू की जानी चाहिए।छात्र संघों, अभिभावक समूहों और नागरिक समाज संगठनों को मिलकर सरकार पर दबाव बनाना चाहिए ताकि शिक्षा के लिए सार्वजनिक फंडिंग बढ़ाई जाए और स्व-वित्तपोषित पाठ्यक्रमों को विनियमित किया जाए।

यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर ध्यान देने और ठोस कदम उठाने की जरूरत है ताकि उच्च शिक्षा सभी के लिए सुलभ और सस्ती बन सके, न कि केवल कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए।

राजस्थान के कई विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों को पेंशन न मिलने या भविष्य में इसकी संभावना कम होने की समस्या गंभीर है, और इस पर राज्य सरकार की शांति या निष्क्रियता कई सवाल खड़े करती है। यह सिर्फ कर्मचारियों की वित्तीय सुरक्षा का मामला नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा संस्थानों के भविष्य और उनमें काम करने वाले लोगों के मनोबल से भी जुड़ा है।

कई विश्वविद्यालय सीधे राज्य सरकार के तहत आते हैं। यदि सरकार विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों को सीधे पेंशन देने की जिम्मेदारी नहीं लेती है या इसमें देरी करती है, तो यह विश्वविद्यालयों के लिए एक बड़ी समस्या बन जाती है, खासकर जब वे स्वयं भी वित्तीय संकट से जूझ रहे हों।

विश्वविद्यालयों की अपनी आय का उपयोग: जैसा कि हमने पहले चर्चा की, यदि विश्वविद्यालय अपनी आय का एक हिस्सा, 25 प्रतिशत सरकार को देते हैं, तो उनके पास कर्मचारियों को पेंशन देने या उनके भविष्य निधि में योगदान करने के लिए पर्याप्त धन नहीं बचता। राजस्थान के विश्वविद्यालय में लड़कियों और कुछ आरक्षित वर्ग के छात्रों से सामान्य छात्रों की तुलना में कम फीस ली जाती है, लेकिन सरकार द्वारा इस कम फीस का पूरी तरह से पुनर्भरण नहीं किया जाता, जबकि कई अन्य राज्यों में सभी छात्रों की फीस समान होती है और आरक्षित वर्ग के छात्रों को सीधे सरकार द्वारा पुनर्भरण मिल जाता है। यदि सरकार आय का 25 प्रतिशत न काटे और आरक्षित वर्ग की फीस का पुनर्भरण कर दे तब कर्मचरियों की पेंशन की समस्या का हल हो सकता है। पर्याप्त सरकारी सहायता के बिना डिजिटल नवाचारों में निवेश करते हैं, तो अंतत: इसका बोझ छात्रों पर फीस वृद्धि के रूप में पड़ सकता है।

पेंशन न मिलना या अनिश्चितता कर्मचारियों के लिए कई तरह से हानिकारक है:सेवानिवृत्ति के बाद की आय की अनिश्चितता कर्मचारियों में भय और चिंता पैदा करती है, खासकर जब उन्हें अपनी बचत पर निर्भर रहना पड़े। जब कर्मचारी यह देखते हैं कि उनकी दशकों की सेवा के बाद उन्हें पर्याप्त सुरक्षा नहीं मिल रही है, तो उनका मनोबल गिरता है, जिससे उनके काम की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।योग्य और अनुभवी शिक्षक तथा कर्मचारी ऐसे संस्थानों की तलाश कर सकते हैं जहाँ बेहतर सेवानिवृत्ति लाभ और वित्तीय सुरक्षा हो, जिससे राज्य के विश्वविद्यालयों में प्रतिभा की कमी हो सकती है।

राज्य सरकार की ओर से इस मुद्दे पर शांति या निष्क्रियता कई बातें दर्शाती है: हो सकता है कि सरकार के लिए कर्मचारियों की पेंशन का मुद्दा अन्य राजनीतिक या आर्थिक प्राथमिकताओं की तुलना में कम महत्वपूर्ण हो। सरकार स्वयं वित्तीय दबाव में हो सकती है और इस मुद्दे को हल करने के लिए तत्काल कोई समाधान न हो। सरकार इस मुद्दे पर कोई स्पष्ट नीतिगत निर्णय नहीं ले पा रही हो, या वह विभिन्न विकल्पों पर विचार कर रही हो जिसमें समय लग रहा हो। कर्मचारियों के भविष्य से जुड़े इस संवेदनशील मुद्दे को हल करने के लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है, जिसकी कमी हो सकती है। यह स्थिति उच्च शिक्षा क्षेत्र में एक बड़े संकट की ओर इशारा करती है। सरकार को जल्द से जल्द इस मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए और विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों के पेंशन के लिए एक स्थायी और सम्मानजनक समाधान खोजना चाहिए ताकि उनके भविष्य की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर

लाला काशीराम की पुण्यतिथि पर घीलोठ विद्यालय में शिक्षा का नया नवाचार

बर्न मुक्त ग्राम अभियान के तहत जल जाने पर प्राथमिक उपचार का प्रमुख संदेश 'जल जाओ तो पानी डालो' प्रिंट किये बैग वितरित किये

अलवर। कर्मयोगी लाला काशीराम गुप्ता, स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व सांसद, अलवर तथा विद्यालय के संस्थापक एवं दानदाता की 47वीं पुण्यतिथि शुक्रवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घीलोठ, तहसील नीमराणा, कोटपूतली-बहरोड़ में श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम का प्रारंभ स्व. लालाजी के परिवार द्वारा दान किए गए 50 पौधों के पौधारोपण से किया गया।

कार्यक्रम के दौरान लाला काशीराम किस्तूरी देवी गुप्ता मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से विद्यालय के 275 छात्रों को विशेष स्कूल बैग्स मुख्य अतिथि रेणु गुप्ता, अल्का गुप्ता, पुष्पा गुप्ता एवं ग्रामवासियों द्वारा वितरित किए गए। इन स्कूल बैग्स की विशेषता यह रही कि इन पर देश की जानी-मानी प्लास्टिक सर्जन डॉ मालती गुप्ता, पुत्री लाला काशी रामजी एवं किस्तूरी देवी द्वारा संचालित एवं निर्देशित बर्न मुक्त ग्राम अभियान के तहत जल जाने पर प्राथमिक उपचार का प्रमुख संदेश 'जल जाओ तो पानी डालो' प्रिंट करवाया गया है, ताकि प्रत्येक बालक इस संदेश को आत्मसात करे और इसे प्रत्येक घर परिवार तक पहुंचाए। इस विषय पर यह अनोखा नवाचार शिक्षा जगत में विश्व में पहली बार अपनाया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रधानाचार्य कालूराम सिरोहीवाल ने लाला काशीरामजी के जीवन पर प्रकाश डाला एवं मुख्य अतिथियों का आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया तथा बर्न मुक्त ग्राम अभियान के तहत जल जाने पर प्राथमिक उपचार के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं को अल्का गुप्ता ने भी संबोधित किया।

कर्मयोगी लाला काशीराम गुप्ता, स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व सांसद अलवर तथा दानदाता की 47वीं पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई।

■ कार्यक्रम का प्रारंभ लालाजी के परिवार द्वारा दान किए गए 50 पौधों के पौधारोपण से किया गया

इस अवसर पर परमानन्द यादव सरपंच ग्राम पंचायत घीलोठ, महताब सिंह चौहान पूर्व सरपंच प्रतिनिधि, राकेश चौहान एसडीएमसी सदस्य, रवीन्द्र खींची पंचायत समिति सदस्य, सतीश चौहान, भामाशाह जलवीर सिंह यादव, परस राम गुप्ता से.नि.अ, विजेंद्र, अनुबाला, अंजु, कविता, मधु, पूनम, नवल सिंह, जयसिंह, सत्यवीर सिंह, दिनेश, दीपक, मुंशीराम, विनोद, जोगेन्द्र, राजेंद्र मेहता, दीपक सोनी, कंवर सिंह आदि उपस्थित रहे।

राशिफल रविवार 20 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 10:33 तक, गंड योग रात्रि 9:8 तक, विष्टि करण दिन 12:13 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 6:12 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 12:13 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:30 से 9:11 तक, लाभ-अमृत 9:11 से 12:33 तक, शुभ 2:14 से 3:55 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:49, सूर्यास्त 7:17

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यक्तिगत कार्य के लिए यात्रा संभव है।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मकर
महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आवश्यक और उचित परामर्श मिल सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मिथुन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि का भय है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।